जई

जई चारे की एक आदर्श फसल है जो दिसम्बर से मार्च तक हरा चारा मुहैया कराती है। बहु कटाई व अधिक उपज के साथ–साथ जई एक उच्च गुणवत्ता वाला स्वादिष्ट व पौष्टिक चारा है।

उपयुक्त किस्में – जावी 8, ओ एल 9, ओ एल 529, केन्ट, डी.एफ. ओ–57 आदि।

खेत की तैयारी एवं भूमि उपचार – खेत को 2–3 बार हैरो व कल्टीवेटर से जोतकर पाटा लगायें। इस समय भूमि में 10–15 टन प्रति हैक्टेयर कम्पोस्ट खाद मिला दें। साथ ही भूमिगत कीड़ों से बचाव हेतु 25 किलो मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत घोल प्रति हैक्टेयर भूमि में मिला दें। खेत तैयार होने के बाद पलेवा करें व ओट आने पर एक दो बार कल्टीवेटर से जुताई करके बोयें।

बीज उपचार – प्रति किलो बीज को 2–3 ग्राम कार्बेण्डेजिम या थाइरम दवा से उपचारित करके बोयें।

बुवाई – बुवाई 90–100 किलो बीज प्रति हैक्टेयर की दर से कतारों में 22.5 सेमी की दूरी पर करें। जई की बुवाई अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। चारे की अधिक उपज प्राप्त करने के लिये अक्टूबर का द्वितीय पखवाड़ा अधिक उपयुक्त पाया गया है। ओ एल–9 की बुवाई मध्य अक्टूबर व केन्ट, जावी–8 एवं डी.एफ.ओ.–57 किस्मों की बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह में करें।

उर्वरक – बुवाई के समय प्रति हैक्टेयर की दर से 40 किलो नत्रजन व 40 किलो फास्फोरस दें। प्रथम सिंचाई के बाद में प्रत्येक कटाई के बाद 25 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से नत्रजन उर्वरक छिटक कर दें।

निराई गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण – जई की फसल के साथ उगने वाले मुख्य खरपतवार बथुवा, मोथा, कृष्णनील, प्याजी, चटरी, मटरी इत्यादि है। इसके नियंत्रण के लिये पहली सिंचाई के 4–5 दिन बाद खुरपी या हो द्वारा निराई गुड़ाई करें।

सिंचाई – पहली सिंचाई बुवाई के 22–25 दिन बाद करें तथा बाद की सिंचाइयां फसल की आवश्यकतानुसार करते रहें। ध्यान रहे कि कटाई के बाद सिंचाई अवश्य देवें ताकि फसल की पुनर्वृद्धि अच्छी हो सके।

चारे की कटाई – समय पर बोयी गयी फसल की पहली कटाई बुवाई के 60 दिन बाद व दूसरी कटाई उसके 45 दिन बाद करें। फसल की अच्छी पुनर्वृद्धि हेतु फसल को भूमि से 4–5 सेमी ऊँचाई से काटें। देरी से बोयी फसल में पुनर्वृद्धि अच्छी नहीं आती है। अतः देरी से बोई गयी फसल में बुवाई के 90 दिन बाद एक ही कटाई लें। हरा चारा की औसत पैदावार 400–500 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर मिल जाती है।

अंत फसलीय या मिश्रित खेती – जई घास कुल की फसल है। इसके चारे की उत्पादकता, स्वादिष्टता गुणवत्ता व पौष्टिकता बढ़ाने के लिये इसके साथ सरसों अथवा फलीदार चारा फसलें जैसे मटर, सैंजी, मैथी, आदि की मिश्रित अथवा अंत फसलीय पद्धति में उगा सकते हैं। सरसों को जई के साथ उगाना इस क्षेत्र के लिये अधिक उत्पादक पाया गया है।

बीज उत्पादन – बीज उत्पादन के लिये पृथककरण दूरी कम से कम 3 मीटर रखें। फसल में पहली बार पुष्पावस्था पूर्व व दूसरी बार परिपक्वता के समय जंगली जई तथा दूसरे अवांछनीय पौधों को जड़ से उखाड़कर बाहर निकाल दें। जई की फसल 120–125 दिन में

पककर तैयार हो जाती है। पकी फसल को काट लें व बाद में सूखने पर थ्रेसर से गहाई कर बीज अलग कर लें। जई का औसत बीज उत्पादन 20–25 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर है। अक्टूबर में बोयी गयी जई की फसल को बुवाई के 60 दिन बाद चारे के लिये काटकर पुनर्वृद्धि फसल से भी बीज उत्पादन किया जा सकता है।

खरीफ में ग्वार की फसल दाने हेतु लेने के पश्चात् रबी व जायद में हरा चारा हेतु क्रमशः जौ, (आर डी 2052) व ज्वार चरी (राज चरी) की फसल लेना लाभदायक साबित हुआ है।

जैविक खेती अपनायें।

उत्पादन लागत कम होगी।।